इन्टरव्यू ३।

कई लोग एक साथ बोलने लगे गुस्से में (इन्टरव्यू के लिए तैयार नहीं थे)

हमरे यहां लगा है बेचारा, उससे दो पैसा मिलेगा उसके बीवी हैं बच्चे हैं इतनी मेहनत करके जब हमें नहीं मिलेगा, बचेगा तो हम उसको क्या देंगे।

प्र: ये आपका करघा है ?
ज: नहीं हमारा नहीं इनका करघा है।

प्र: आप लोग भी करघे पर काम करते हैं ?
ज: कई लोग यहां सब हैण्डलूम वाले हैं सब लोग बुनकर हैं।
तानी भी तो मंहगाई है अनाज भी तो मंहगाई है, कुछ बचता ही नहीं हम लोग को क्या करें, कितना खाये पैसे के बगैर हमारे बच्चे, शिक्षा भी नहीं पा रहे हैं।

प्र: आपको कारण क्या लगता है क्यों दिन पर दिन स्थिति खराब हाती जा रही है ?
ज: इसका कारण यही है कि जो तानी मंहगा हो रहा है बाना मंहगा हो रहा है, उसका कारण है कई.....
जो चीज पहले 500रुपये किलो थी आज वो 1500 रुपया किलो दे तो कैसे होगा, मजदूरी वहीं है 15 साल पहले जो 300 रुपया आज भी वही है, तो वो बेचारा क्या करेगा, क्या कमायेगा क्या खायेगा क्या अपने बाल बच्चें को शिक्षा देगा।

प्र: लेकिन कोई बता रहा था कि रेशम का दाम सस्ता हुआ है ?
ज: नहीं ये सब खाली आदमी-आदमी की बात है, शेयर बाजार है इस समय दाम फिर उंचा है इस समय करीब करीब 3-4 सौ रुपये दाम ऊंचा हो गया है, 700 रुपया बढ़ता है तो 200रुपया घट जाता है तो हल्ला होता है कि घर गया है, तो कहां घटा।

प्र: अच्छा आप लोग, भी साड़ी एक्सर्पोट भी होती है ना ?
ज: हां।

प्र: अगर सरकार एक्सर्पोट पालिसी में कोई बदलाव करती है तो आप लोगों पर भी फरक पड़ता है ?
ज: नहीं कोई फरक नहीं, मजदूरा आदमी को कोई फरक नहीं पड़ता, मेन आदमी को फरक पड़ता है।

प्र: मेन आदमी कौन ?
ज: जैसे हम बिन के आगे देते हैं, तो उनका फायदा होता है, जैसे चौक में, जो बैठे है उनका फायदा होता है जैसे ये साड़ी 1000 की है तो हमें 1000 मिलेगा, फिर चाहे वो उसमें दस हजार में बेचे।

प्र: अच्छा आप लोग को पता भी नहीं होता कि वो लोग कितने में बेचे ?
ज: नहीं हम लोग नहीं पता होता।

प्र: आप लोग का फिक्स रेट होता है ?
ज: हां हमारा तो फिक्स रेट है जैसे हम लोग 1000 की बिने तो 1000 की बेचेंगे, और तानी का दाम भी बढ़ गया तो उसका दाम भी नहीं बढ़ेगा, साड़ी का दाम नहीं बढ़ेगा।

प्र: और मजदूरी ?
ज: कुछ नहीं बढ़ेगा जितना फायदा है सब आगे वाले का।

प्र: आप लोग कितने साल से कर रहे बुनाई ?
ज: अरे हम लोग तो पैदा ही इसी में हुये।

प्र: नहीं मतलब जब से होश संभाले ?
ज: कम से कम दस साल से।

प्र: तो दस साल में साड़ी में क्या-क्या चीज बड़ा है, मतलब मजदूरी, तानी बाना, रेशम और क्या चीज घटा है ?
ज: मजदूरी घट गयी है, तानी का दाम बढ़ गया है और अनाज का दाम बढ़ गया है मिसाल के तौर पर आज से दस साल पले हम 500 रुपय किलो लेते थे लेकिन आज वही चीज हम 1500-2000 किलो लेते है, वही चीज है सब कुछ वही है 1000 रुपये में, पहले भी बेचते थे 1000 रुपये की आज भी 1000 रुपये की, बताइये हम लोग को क्या मिला।

प्र: मजदूरी बिलकुल नहीं बढ़ी है दस साल में ?
ज: एकदम नहीं बढ़ी है दस साल के अन्दर अन्दर एक पैसा नहीं बढ़ा है समझ लीजिये इस वक्त हमसे बेहतर किसान है।

प्र: तो आप लोग इसके लिए कोई समिति नहीं बनाये कि सरकार से उसके लिए कहें जाकर, लोग संगठन बनाकर ?
ज: जैसे ये कॉपरेटिव वाले हैं, इनका धंधा अलग है, है इसी से जुड़ा हुआ पर वो अलग है।

प्र: वो लोग बुनकारी नहीं करते ?
ज: वो अपने मजे हैं, आजकल दुनिया अपने मजे में हैं, वो साड़ी खरीदते हैं.....
कई लोग.....

प्र: नहीं हम इसलिए पूछ रहे कि हम सुने थे कॉपरेटिव बनाते है तो सरकार कुछ लोन देती है ?
ज: सरकार हम लोगों को कोई लोन वोन नहीं देती, कोई सुविधा नहीं देती हैं।
कई आवाज.....
ऐसा है किसान लोगों को मिल जायेगा, पर हम को सरकार लोन नहीं देती।

प्र: लेकिन सुना है कि बैंक में लोन की योजना है, कॉपरेटिव में भी बनाते है तो लोन की योजना दे ता आप लोगों को क्यों इसका फायदा नहीं मिला ?
ज: हां हमें इसका कोई फायदा नहीं मिला।

प्र: और जो लोग आप बता रहे हैं कि कॉपरेटिव बनाये हुए है वो कैसे बना लिये ?

ज: वो लोग जैसे 2-4 बड़े-बड़े आदमी हो गये, अपने तरीके से मुहल्ले में दो चार लोग पढ़े लिखे। अपने जरिये से आगे से बात करके अपना बना लिये हैं, हम लोग को तो उतनी कमाई नहीं है कि इसका फायदा उठाये।

प्र: लेकिन उसमें सुने है 20 बुनकरों का होना जरूरी होता है ?
ज: हां हां खाली नाम लिख देते है बस पर उससे कोई फायदा नहीं है उसको जैसे हमारा नाम ले लिया, पर हमको इससे कोई फायदा नहीं है सब फायदा उनका है जैसे उन्होंने अपना एक बनाया और उस वक्त हमें आप बस दिख दीजिये कि हमारे पास इतने मेम्बर हें।

प्र: झूठ दिखा दें ?
ज: हां झूठ दिखा कर बस मेम्बर बना लिया, उसके बाद मै जब उनका काम हो गया तो फिर हमारा माल तक नहीं देखते हैं नहीं खरीदते है, तो जैसे चौक में मांगते हैं 1000 की तो वो 800 की ही मांगेगे, मजबूरी का फायदा उठाते हैं। वो आधे दाम लगाते हैं।

प्र: तो ये बताइये कि जब समिति बनाने का नियम है, तो लोग इसका फायदा भी उठा रहे हैं तो आप लोग क्यों नहीं प्रयास करते बनाने का ?
ज: ऐसा है कि सब कुछ पैसे पर है।

प्र: क्या उसके लिए पैसे लगते हैं ?
ज: बिलकुल, जब हम दस लोग का माल लेंगे तो पैसा देंगे न, जब पैसा ही नहीं होगा तो माल कहां से लेंगे।

प्र: नहीं उसमें माल-वाल की बात ही नहीं है, आप हो- नियम ये होता है कि 20 या 25 लोग इकट्ठा हो गये, जाकर शायद कुछ पैसा भी जमा करना होता हैं गये नोट बैंक में दिखाये बस ?
ज: लेकिन ऐसा कोई फायदा दिखाया नहीं 10-12 साल से हम देख रहे है
अन्य टीम बना रहे हैं पर कोई फायदा नहीं हो रहा है बुनकर लोग बहुत परेशान है और आगे परेशानियो में परते जा रहे हैं।

प्र: तो ये बताइये इतनी खराब स्थिति में क्या करेंगे ?
ज: मालिक है, ऊपर वाला है बस उसी में भरोसे है।

प्र: आप लोग कुछ नहीं करेंगे ?
ज: कुछ नहीं करेंगे क्या हम लोगन की जब आगे सुनवाइये नहीं है तो जाकर क्या करेंगे। बस ऊपर वाले के भरोसे है, जो भोगा तो ठीक भोगा।

प्र: नहीं लेकिन सिर्फ ऊपर वाले के भरोसे बैठकर तो नहीं रहा जा सकता ?
ज: अपना हाथ पैर तो मार रहे है न? जितना मिलेगा उतने में बस सबर करेंगे। उतने दिन से कर रहे हैं जब तक जिन्दगी है तब तक करेंगे।

प्र: आगे के लिए आप लोग कुछ सोचे नहीं हैं ?
ज: क्या सोचें भाई जब आगे कोई हमारा, रह कैसी हमारा कोई नहीं है रहनुमा प्रयास नहीं कर रहा तो..... कॉपरेटिव बनायें... जब हमाा वो नहीं ख्याल कर रहा तो हम किसके आगे जाये यही सोच कर न फोटो वगैरह दिया है कि भाई

ये हमारा कुछ मान करेंगे, जब हमारा वो नहीं, काट रहे तो, दोष हम किसको बांधे वो फायदा उठा रहे उससे जैसे अब हम 1000 की साड़ी बेच रहे वही साड़ी 700-800 में आगे रहे तो कैसे हमारा होगा।

प्र: तो आप सब लोग साड़ी गिरहस्ता को देते हैं सीधे चौक ले जाकर नहीं बेचते ?
ज: नहीं कुछ लोग चौक भी देते है जैसे जिसका हिसाब हो।

प्र: अच्छा आप लोग को मान लीजिये कभी कर्ज लेना हुआ तो किससे लेते हैं बैंक से?
ज: गिरहस्ता से।

प्र: बैंक से कभी नहीं लिया ?
ज: कभी नहीं बैंक से ब्याज देना होगा।

प्र: गिरहस्ता को ब्याज नहीं देना होता ?
ज: नहीं।

प्र: साड़ी में काटते हैं ?
ज: हां

नाम- 1. मोहम्मद इखलाक
उम्र 25-26 साल, दस साल से बुनाई कर रहे हैं।
2. मोहम्मद रोशन
उम्र 22 साल, 8 साल से बुनाई कर रहे हैं।
3. इबलाल मोहम्मद
उम्र 25 साल
4. मोहम्मद अदनाम
5. मोहम्मद आरीफ
उम्र 25 साल
6. राजू
उम्र 25 साल

(कुछ देर बाद फिर से बातचीत उनकी पहल पर - बत्ती नहीं रहती, हमारे ऊपर जुल्म हो रहा है, जब वोट लेना होता है तो नेता लोग कहते हैं हम ये कर देंगे, वो कर देंगे, जीत जाते हैं, तो फिर कहते हैं तुम अपना काम करो, हम अपना काम करें। हम कैसे जी रहे कि मर रहे कोई देखें वाला नहीं है।)